दलित चेतना के सन्दर्भ में 'नीला आकाश'

[1]मेहनाज़ बेगम

सारांश

दलित साहित्य वास्तविक रूप से दलित चेतना का साहित्य है। चेतना का सम्बंध दृष्टि से होता है जो दलितों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक भूमिका की छवि के तिलस्म को तोड़ती है। आलोच्य उपन्यास 'नीला आकाश' में लेखिका सुशीला टाकभौरे ने दलित जीवन के यथार्थ को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। दलितों के भीतर जागृत चेतना के कारण यह उपन्यास अन्य दलित उपन्यासों से भिन्न प्रतीत होता है क्योंकि इसमें दलितों के आपसी भाईचारे और एकता का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। 'नीला आकाश' शीर्षक प्रतीकात्मक है, यह जीवन के जटिल उज्जवल भविष्य की आशा रखने वाला एक सशक्त उपन्यास है। लेखिका को युवा पीढ़ी के भीतर एक उज्जवल भविष्य की आशा की किरण दिखाई देती है। नीलिमा और आकाश भविष्य की संभावनाएं और सफलताएं लेकर उपस्थित हुए हैं। दलित समाज की नयी पीढ़ी शिक्षित, सबल और जागरुक होकर इसी तरह सामाजिक आन्दोलन में अपना योगदान देती रहेगी, इसी आशा के साथ लेखिका उनकी सफलता की कामना करती है।

कुंजीभूत शब्द - दलित, साहित्य, सांस्कृतिक, तिलस्म, परिलक्षित, प्रतीकात्मक, उज्जवल, संभावनाएं।

---

[1]पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी), नेट, सेट, जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू - 180006, email: mehnazbegum4050@gmail.com , Mob 9622354050

प्रस्तावना

भारत की परम्परागत वर्ण-व्यवस्था के कारण लम्बे समय से दलित असम्मान का पात्र बना रहा है, चाहे कितना भी वह सर्वगुण सम्पन्न क्यों न हो, कार्य कुशल हो। अपनी मेहनत से ऊँचे पद पर क्यों न हो। किसी भी चुनौती का सामना करने के समय 'जाति' सदैव दलितों को परस्पर बाँटने और कमज़ोर करने का एक शक्तिशाली हथियार बनती है। इसी तरह की जातीय-व्यवस्था में शूद्रों से भी अधिक निचले पायदान पर आते है - 'अति शूद्र' इन्हें ही दलित कहा गया। दलितों को हमेशा अपने अधिकारों से वंचित रखा गया छुआछूत, जातीय उत्पीड़न निरन्तर उनके साथ रहा है। इसी वर्ण-व्यवस्था के कारण इन्हें प्रवंचना और प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा।

दलित साहित्य यथार्थ में दलित चेतना का साहित्य है। दलित चेतना का सीधा सरोकार 'मैं कौन हूँ?' से बहुत गहरे तक जुड़ा हुआ है। चेतना का सम्बंध दृष्टि से होता है। जो दलितों की सांस्कृतिक, ऐतिहासक और सामाजिक भूमिका की छवि के तिलस्म को तोड़ती है। इस सन्दर्भ में आलोच्य उपन्यास 'नीला आकाश' की लेखिका सुशीला टाकभौरे ने दलित जीवन के यथार्थ को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। इसमें दलितों के भीतर जागृत चेतना के कारण यह उपन्यास अन्य दलित उपन्यासों से भिन्न प्रतीत होता है। क्योंकि इसमें दलीतों के बीच जो आपसी मनमुटाव है, उसमें एकता की भावना लाने के सम्पूर्ण गुण दिखाई देते हैं। इससे पहले के दलित उपन्यासों में यह भाव नहीं उनमें सिर्फ उच्च वर्ण से संघर्ष व

ऊँच-नीच के भाव दर्शाए गए हैं। इन विचारों से बढ़कर 'नीला आकाश' में दलितों के आपसी भाईचारे का भाव बड़ी सरलता से वर्णित किया गया है।

'नीला आकाश' दलितों की व्यथा और एकता की कथा है, जिसमें दलित जीवन का कठोर यथार्थ उभरकर सामने आया है जो अतीत, वर्तमान और भविष्य की आशाओं-आकांक्षाओं को व्यक्त करता है। यह केवल दलित व्यथा-कथा नहीं बल्कि उनके मोहभंग, बेबसी और आशावादिता की कथा है जिसमें लेखिका ने समाज व्यवस्था की आन्तरिकता, दृढ़ता, आत्मीयता और समर्पणशीलता को अपनी लेखनी के संस्पर्श से अनन्य बना दिया है। यह जीवन के जटिल उज्जवल भविष्य की आशा रखने वाला एक सशक्त उपन्यास है।

'नीला आकाश' शीर्षक प्रतीकात्मक है, यह आकाश लेखिका के मन का आकाश है, जहाँ उनके विचार, उनकी भावनाएँ और उनकी अपेक्षाएं मुखरित हैं। इसमें सवर्णों के षडयंत्रों के साथ दलितों के शोषण, उत्पीड़न और अभावपूर्ण जीवन का चित्रण है। लेखिका ने उपन्यास में मातंग और वाल्मीकि जाति की एकता का उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया है कि यदि सभी दलित जातियाँ (चमार महार, खाटिक आदि) एकता और प्रेम के साथ संगठित होंगे तो बड़ी ताकत बनेगी। महार और चमार दलित जातियों का यह कार्व्य है कि वे अन्य पिछड़ी दलित जातियों को अपना सहयोग देकर, उन्हें भी समकक्ष आने के अवसर प्राप्त करने दें क्योंकि ये दो जातियाँ (महार और चमार) दलित आन्दोलन से जुड़कर, प्रगति और परिवर्तन के पथ पर आगे हैं।

लेखिका ने उपन्यास के प्रमुख पात्र नीलिमा और आकाश के अन्तरजातीय विवाह के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि दलित जातियों के बीच अन्तरजातीय विवाह होने चाहिए जिससे कि दलित एकता मजबूत होगी। इसी तरह व्यक्तिगत जीवन के साथ सामाजिक उत्थान के कार्यों को भी महत्व दिया गया है। उपन्यास में पात्रों द्वारा बनाई गयी कुछ संस्थाओं के माध्यम से समाज-जागृति लाने का प्रयास किया गया है।

महिलाओं के पूर्ण व्यक्तित्व विकास को भी महत्वपूर्ण माना गया है तथा स्त्री-पुरुष समानता की भावना जागृत करने हेतु पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था में स्त्री सबलता को आवश्यक माना गया है। लेखिका ने उपन्यास की पात्र नीलिमा के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट किया है। नीलिमा गाँव के सभी लोगों को सम्बोधित करते हुए कहती है -

"पूरा देश जानता है, पूरा विश्व जानता है, महिलाओं के उद्धारक कौन हैं? डॉ. अम्बेडकर ने हमारे देश के संविधान में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार दिए हैं, यह बहुत बड़ी बात है।"[1]

उपन्यास में कन्हान महाराष्ट्र के एक गांव की कथा को केन्द्र में रखा गया है। पूरा गाँव जाति और वर्ण के आधार पर अलग-अलग मोहल्लों में बँटा है। गांव के बाहर, नाले के किनारे अछूत जाति के घर हैं। मांग तथा वाल्मीकि जाति के उदाहरणों द्वारा ही लेखिका ने दलितों की पीड़ा को मुखरित किया है। ये दोनों ही जातियां सेवानगर में रहती हैं। ये सभी लोग श्रम और संघर्ष करते हुए कष्ट और अभाव का जीवन जीते हैं। भीकूजी और चन्दरी जैसे दलित वर्ग के प्रतिनिधि पात्र केवल स्वयं तक ही सीमित नहीं हैं वे अपने दलित शोषित समाज की मुक्ति और उत्थान के लिए प्रयासरत हैं।

लेखिका ने दलित जीवन की त्रासदी का वर्णन भीकूजी के माध्यम से किया है। सवर्णों द्वारा बताए गए कार्यों को पूर्ण रूप से करने पर भी उन्हे अपमान और तिरस्कार ही मिलता है। अतः मेहनत करने के बावजूद अपमानजनक जीवन जीना पड़ता है। भावनात्मक स्तर पर दलित जातियां भले ही एक-दूसरे के दुख-सुख में सहयोग देते हों किन्तु आर्थिक दृष्टि से सभी गरीब और अभावग्रस्त जीवन जी रहे हैं।

दलित जातियां आपस में एक दूसरे को निम्न समझती हैं। ये अछूत जातियाँ अपने से दूसरी को छोटा मानती हैं और कभी अपने स्वार्थ हेतु लड़ते-झगड़ते भी हैं। अतः दलित भीतर दलित पैदा होने की समस्या को भी उपन्यास में उजागर किया गया है। नीलिमा दलितों को आपसी भाईचारे का बोध करवाते हुए कहती हैं -

"ऊँची जात वालों से तुमने क्या यही बात सीखी है आपस में भेदभाव करना - बस! वे हमें आपस में लड़वाकर ही बड़े बने हैं। यदि हम एक हो जायें, तो वे अपने सामने कहीं के नहीं।"[2]

शिक्षा संस्थानों में व्याप्त भेदभाव को भी दर्शाया गया है। दलित जातियों के साथ स्कूलों में छुआछूत, जातिभेद के कारण शिक्षा का अभाव, शिक्षक का दलित बच्चों की पढ़ाई की तरफ अधिक ध्यान न देना,उनको मारना-पीटना और दलित बच्चों का भेदभाव के कारण पढ़ाई से कतराना और अंततः स्कूल से निकाल दिया जाना आदि शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को रेखांकित किया गया है। भीकूजी के माध्यम से लेखिका ने दलित चेतना के स्वर को मुखरित किया है, वह कहता है -

"हम भी स्वतंत्र देश के स्वतंत्र नागरिक हैं। देश के लिखित संविधान के अनुसार हमें भी शिक्षा पाने का और अच्छी नौकरी पाने का समान अधिकार है।"[3]

'नीला आकाश' उपन्यास के पात्र अन्य पात्रों से भिन्न प्रतीत होते हैं। भीकूजी और चन्दरी पुरानी पीढ़ी के होते हुए भी एक नयी सोच तथा दृष्टि रखते हैं। गांव के लोगों में व्याप्त अन्धविश्वास के होते हुए भी भीकूजी बलि प्रथा पर रोक लगाते हैं। वह कहते हैं -

"अन्धविश्वास से पूर्ण पूजा अनुष्ठानों का हम विरोध करेंगे। अब हम इस तरह बलि देने की पूजा नहीं करेंगे, दूसरे लोगों को भी यह बात समझायेंगे।"[4]

अतः अपने भीतर वह एक विद्रोह की भावना रखते हैं किन्तु सवर्णों की शक्ति के आगे उनका विद्रोह नहीं चल पाता। वह भी अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर, उच्च शिक्षा दिलवाकर उन्हें योग्य बनाना चाहते हैं किन्तु सवर्णों द्वारा बनाई गयी सामाजिक-व्यवस्था के कारण उनके सपने साकार नहीं हो पाते और उनके बच्चों को पढ़ाई से वंचित कर दिया जाता है। भीकूजी सवर्णों के शोषण और अन्याय के प्रति अपने विद्रोह-भाव प्रकट करते हुए कहते हैं कि -

"क्यों हम ऐसा जीवन जीते हैं। क्यों हम सवर्ण समाज से अलग, बहिष्कृत, अपमानित, दलित, अछूत, बेबस, मजबूर जीवन जीते हैं? स्वतंत्र देश में रहकर भी, रूढ़ि परम्पराओं से पराधीन!"[5]

अतः पुरानी पीढ़ी के पात्रों के भीतर भी विद्रोह की भावना है, अपने अधिकारों को प्राप्त करने की एक लालसा है किन्तु वह पूर्ण रूप से जागरुक नहीं हैं और यह कार्य नीलिमा और आकाश के रूप में उनकी नयी पीढ़ी करती है।

नीलिमा और आकाश जैसे नयी पीढ़ी के युवा पात्र अपने दलित समाज को जागरुक करने में अहम भूमिका निभाते हैं। वह दोंनो उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी पूरी जाति को सचेत कर उनके भीतर जागरुकता लाने का प्रयास करते हैं। वह अपने ही गाँव में अनेक संस्थाएं बनाते हैं जिससे कि वह सामूहिक रूप से सभी को समझा सकें। वह दोनों मिलकर लोगों को डॉ. अम्बेड़कर के कार्य तथा उनका दलित-पीड़ित जातियों के उत्थान के लिए किया गया संघर्ष के बारे में उनको बताते हैं। गाँव के कुछ अनपढ़ लोग अम्बेड़कर जयंती न मनाने के पक्ष में होते हैं किन्तु नीलिमा अम्बेड़कर जी के जीवन-संघर्ष और दलितों के प्रति उनका योगदान के विषय में उनको बताती है। वह कहती है -

"केवल महाराष्ट्र ही नहीं, बल्कि पूरे देश में अछूत दलित जाति के लोग अपने नेता डॉ. अम्बेड़कर की जयन्ती का कार्यक्रम मनाते हैं। इन्होंने ही अपने देश का संविधान लिखा है और संविधान में हमें, सवर्णों के बराबर शिक्षा और नौकरी पाने के अधिकार दिए हैं। उनके बताए मार्ग पर चलकर ही हम आगे बढ़ सकेंगे।"[6]

शिक्षा, संगठन और संघर्ष की राह बाबा साहब ने ही दिखाई है। अतः वे समझ जाते हैं कि समता और सम्मान का अधिकार बाबासाहब ने ही उन्हें दिलाया है। इस तरह उनकी दृष्टि में बदलाव आता है और अब वे वाल्मीकि जयन्ती न मनाकर डॉ. अम्बेड़कर जयन्ती मनाने लगे तथा अण्णभाऊ साठे जैसे महान समाज-सुधारक की विचारधारा को भी समझने लगे और इस तरह से नयी पीढ़ी अपने दलित समाज को जागृत कर उनमें परिवर्तन लाने में सफल सिद्ध होती है। उपन्यास का युवा पात्र आकाश भी लोगों को समझाते हुए कहता है-

"डॉ. अम्बेड़कर ने सभी शूद्र, अछूत, शोषित, पीड़ित, दलित, पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए बहुत संघर्ष किया है। उनके कार्यों और उनके जीवन के अनुभवों को आप सुनो और समझो।"[7]

अतः नयी पीढ़ी दलितों के आपसी भाईचारे तथा एकता की समर्थक है। यदि दलित जातियां आपस में एकजुट होकर रहेंगी तो तभी वह उच्च जाति के लोगों से लड़ पायेंगे। नयी पीढ़ी ने दलित सुधार के कई आयोजन तथा संस्थाएं चलाईं जिसके माध्यम से दलितों में जागरुकता पैदा हुई और उन्होंने पुरानी रूढ़ियों तथा मान्यताओं को तोड़कर नयी मान्यताओं को अपनाया और अन्त में नीलिमा और आकाश का विवाह बौद्ध पद्धति द्वारा करवाकर लेखिका ने पुरानी परम्पराओं पर नई परम्पराओं की विजय दिखाई है। नीलिमा और आकाश दोनों अपनी शर्त रखते हुए कहते हैं कि -

"विवाह होगा, तो बौद्ध पद्धति से ही होगा। जब हम डॉ. अम्बेड़कर की विचारधारा को मानकर, सामाजिक आन्दोलन से जुड़े हैं, तब डॉ. अम्बेड़कर के धर्म अनुष्ठान से ही विवाह करेंगे।"[8]

अतः यह विवाह उत्सव के साथ विजय उत्सव है - पुरानी परम्पराओं पर नई परम्पराओं की विजय। लेखिका को यह विश्वास है कि यदि नयी पीढ़ी आगे आकर अपनी पुरानी पीढ़ी के लोगों को जागरुक करे तथा समाज-परिवर्तन लाने का एक बीड़ा उठा ले तो वे आवश्य सफल होंगे तथा दलितों की आपसी एकता और भाईचारा ही उन्हें मिलजुल कर आगे बढ़ने में सहयोग दे सकता है। आकाश अपने पिता से कहता है कि -

"अब जमाना बदल रहा है। पुराना सब कुछ बदलना होगा, तभी नई रीति परम्पराएं शुरू होंगी। पुरानी परम्पराओं से चिपके रहकर हम नई बातों की अच्छाई और लाभ को समझ नहीं पाते हैं। गौतम बुद्ध के 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' के संदेश से ही हमारी पीढ़ियां प्रगति परिवर्तन के मार्ग पर आगे बढ़ सकेंगी।"[9]

निष्कर्ष

अतः एक उज्जवल भविष्य की आशा की किरण उन्हें युवा पीढ़ी के भीतर दिखाई देती है। नीलिमा और आकाश भविष्य की संभावनाएं और सफलताएं लेकर उपस्थित हुए हैं। दलित समाज की नयी पीढ़ी शिक्षित, सबल और जागरुक होकर इसी तरह सामाजिक आन्दोलन में अपना योगदान देती रहेगी, इसी आशा के साथ लेखिका उनकी सफलता की कामना करती है।

नीलिमा और आकाश जैसी वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियां दलितों के शोषित-पीड़ित जीवन में पूर्ण परिवर्तन लाएगी - तभी वे धरती से लेकर आकाश तक अपने संघर्ष और सफलता की पताका फहरा सकेंगे।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि लेखिका सम्पूर्ण दलित जातियों की युवा पीढ़ी के सुखद एवं सफल भविष्य की आशा के साथ दलित एकता, संगठन और बन्धुत्व की अपेक्षा करती हैं।

संदर्भ

1. सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, पृ. 104
2. वही, पृ. 78
3. वही, पृ. 22
4. वही, पृ. 50
5. वही, पृ. 29
6. वही, पृ. 81
7. वही, पृ. 85
8. वही, पृ. 102
9. वही, पृ. 103-104